International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 18-09-2019; Accepted: 20-10-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 6; November 2019; Page No. 49-50

मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी चेतना

Sunitha P
Department of Hindi, Dakshin Bharath Hindi Prachaar Sabha, Ernakulam (South), Kerala, India

प्रस्तावना

समकालीन हिंदी कथा साहित्य में नारी जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों और समस्याओं से संबंधित कई रचनायें लिखी जा रही है ।भारतीय परिवेश में शिक्षा और पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक संबंधों में क्रांतिकारी परिवर्तन आने लगे हैं।इन परिवर्तनों की आंधी ग्रामीण अंचलो को भी प्रभावित कर रही है । वर्तमान समय में कई लेखक और लेखिकाओं ने अपनी रचनाओं में नारी से संबंधित कई विषयों को केंद्र बिंदु बनाया है ।

विगत तीन दशकों में हिंदी साहित्य में अपने लेखन से जिन लेखिकाओं ने रूढ़िगत अन्धकार के स्थान पर परिवर्तन रुपी प्रकाश का अभियान चलाया उनमें मैत्रेयी पुष्पा में अपनी अलग पहचान बनायीं है । नारी जीवन एवं नारी विद्रोह उनके लेखन का भाव रहा है ।अनुभव अनुभूति का उनका सर्जनात्मक लेखन आम आदमी की ज़िन्दगी को व्यक्त करने के साथ साथ पाठकीय संवदेना उभरने में भी सक्षम है ।मैत्रेयी पुष्पा के लेखन में स्त्रियों की जो अनसुनी कहानियां है जो आम तौर पर दबा और तिरस्कृत किया जाता है ।मैत्रेयी पुषपा के लेखन स्त्री विमर्श के मील का पत्थर माना जाता है ।अपने उम्र के उत्तरार्ध में मैत्रयी पुष्पा ने लिखना शुरू किया था ।उनकी रचनाओं में गांव का मिट्टी का गंध मिलती है क्यों कि गांव के दुःख दर्द से उनका आत्मिक लगाव है ।उन्होंने हिंदी साहित्य को महानगरों की तनाव भरे परिवेश से निकाल कर गांव की खेतों के पास पहुंचा दिया वैसा कभी किसी लेखिका ने नहीं किया है ।

मैत्रेयी पुष्पा के केन्द्र में नारी है | उनके कथा साहित्य में पुरुष प्रधान समाज के प्रति आक्रोश दिखाई देता है| वे नारी के स्वतंत्रता के पक्षधर है| मैत्रेयीजी की यह मानना है कि स्त्री और पुरुष आज भी इस पितृसत्तात्मक समाज में जैविक ,सामाजिक , आर्थिक धरातल पर भिन्न है| पुरुष को जो सुविधायें उपलब्ध है वह इस समाज में स्त्री को सुलभ नहीं है| स्त्री आज भी पीड़ित है दलित है| वह आज भी एक वस्तु मानी जाती है| ग्रामीण परिवेश में यह स्थिति और भी भयानक है | मैत्रेयी पुष्पा ने साहित्य की कई विधाओ में अपनी लेखनी का परिचय दिया है | उनके प्रमुख उपन्यास है- बेतवा बहती रही (१९९४) ,इदन्नमम (१९९५), चाक (१९९७) , (१९९९), अल्माकबूतरी (२०००), अगन पाखी (२००१) विजन(२००४),कहीं ईसुरी फाग(२००४) त्रिया-हठ (२००६) आदि| उनके कहानी संग्रह है- चिन्हार ,लालमानियाँ ,गोमा हस्ती है आदि |

बेतवा बहती रही' उपन्यास में उन्होंने 'उर्वशी नामक स्त्री की नारकीय दशा को चित्रित किया है| स्वार्थी भाई और कामांध बूढ़े पति के कुटिल षड्यन्त्र में फंसकर उर्वशी का जीवन नरक बन जाता है| पुरुष प्रधान समाज के पारिवारिक शोषण का भयावह चित्र अपनी माँ कस्तूरी देवी के विधवा जीवन की प्रेरणा से इस उपन्यास की रचना की|

'इदन्नमम 'उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने तीन पीढ़ियों के स्त्रियों की व्यथा कथा को प्रस्तुत किया है |विधवा ,जवान और नाबालिक स्त्री किस तरह समाज की व्यवस्था द्वारा शोषित होती रहती है | स्त्री से ज़्यादा अहमियत खेत खलिदान और संपत्ति को देकर पुरुषवादी समाज अपने रिश्ते नातों की धाज्जियाँ उडाता हुआ तीनों स्त्रियों को अपने शोषण का शिकार बनाता है |तब उपन्यास की नायिका मंदा सम्पूर्ण नारी जाती का प्रतीक बनकर शोषण संघटन और सामूहिक विद्रोह से अपने अधिकारों की तरफ बढ़ जाती है|समाज के लिए अपने जीवन को समर्पित करके मंदा वर्तमान व भविष्य की उज्ज्वल राह की दिशा का संचार कर रही है |

मैत्रेयी के 'चाक' उपन्यास उत्तरपुर गांव की एक विद्रोह गाथा है |इस गांव की औरतें पुरुष के अहम् शील और सतीत्व की रक्षा के नाम पर बलि चढ़ा दी जाती है लेकिन इस उपन्यास की नायिका सारंग जो है वह वेदना और आंसू को छोड़कर संघर्ष की भूमिका अपनायी है| [1] "चाक " के विषय में कान्ति कुमार ने कहा है "चाक हिंदी क्षेत्र की गांव का ऐसा औपन्यासिक वृतांत है जो ग्रामीण समाज की राग रंगों ,प्रतिशोधों ,अनुरागों और जीवन के बदलते हुए संदर्भों के कॉकटेल से तैयार हुआ है " इस उपन्यास के ज़रिये मैत्रेयी जी ने उत्तरपुर गांव के ऐसे चित्र दिए है कि प्रबुद्ध पाठक भी एक बार रेनू के मेरीगंज गांव को भूल जाता है |'चाक' का एक पात्र रेशम एक विधवा नारी है उनकी सारी खुशियाँ पति की मृत्यु के साथ समाप्तः हो जाती है |रेशम विधवा होने के बावजूद भी किसी से प्रेम करती है और गर्भवती होकर सामान्य जीवन जीना चाहती है लेकिन समाज उसे मानते नहीं है |वह समाज में साहस के साथ जीना चाहती है लेकिन उसकी हत्या होती है |

'झूला-नट ' उपन्यास में शीलो नामक एक स्त्री की गाथा है |शीलो के हाथ में छह उंगलियां होने से और पति के अनुरूप सुन्दर न होने के सात साल तक अपनी पति की प्रतीक्षा में व्रत उपवास तावीज़ आदि के सहारे काट लेती है | अपना पति दूसरी शादी कर लेता है इस से शीलो का जीवन और भी नरक हो जाता है | पारिवारिक शोषण के शिकार होने वाली शीलो अपने आपको तपाकर संघर्ष के लिए तैयार हो जाती है |

'अलमा कबूतरी' उपन्यास में कबूतर जन जाति के जीवन संघर्ष का चित्रण अलमा के माध्यम से किया है | 'अगन पाखी' एक ऐसा उपन्यास है जो मानवीय संबंधों की जटिलताओं को प्रस्तुत करता है | यह भुवन मोहिनी नामक स्त्री के जीवन संघर्ष पर आधारित है| यह उपन्यास मैत्रेयी पुष्पा के स्मृति दंश पर आधारित है|

'विजन ' उपन्यास शहरी परिवेश पर आधारित है | इसमें लेखिका चिकित्सा क्षेत्र में आने वाले विद्रूपताओं और कुरूपताओं को पर्दाफाश किया है | इसमें प्राइवेट चिकित्सा संस्थाओं में होने वाली अराजकता औरअमानवीयता का खुलकर वर्णन किया है | डॉक्टर नेहा के माध्यम से ईमानदारी से काम करने वाली कर्मठ नारी का चित्रण और स्त्रीजीवन में होने वाले विभिन्न संघर्षों के पहलू चित्रण उन्होंने सजीवता के साथ प्रस्तुत किया है |

मैत्रेयी पुष्प की आत्मकथा है 'गुड़िया भीतर गुड़िया ' | इसमें घर , परिवार और समाज के दबाओं से जूझती एक सामान्य स्त्री की गाथा है | इस प्रकार 'कस्तूरी कुण्डल बसै "भी उनकी आत्मकथात्मक शैली में लिखा या उपन्यास है | इसमें उन्होंने अपनी शैशवावस्था से विवाह और विवाहोपरांत एक बेटी होने तक के अपने जीवन को प्रस्तुत किया है | मैत्रयी पुष्पा की कहानियों की और दृष्टी डालें तोमालूम होता है की उनका लेखन समाज की गहरी पड़ताल करके सामजिक प्रबोधन के साथ परिवर्तन मांग करता है | हज़ारों सालों से चली आयी परम्परा पति के आदेशानुसार चलना अब नारी के लिए असहनीय है |वह सामजिक आदर्शों के अनुसार अपनी इच्छा से जीवन व्यतीत करती है | मैत्रेयी की ' फैसला 'कहानी में वसुमती का पति गांव का प्रधान होने के कारण वह अपने पथ का गलत उपयोग करता है |उसके बुरों कार्यों को रोकने के लिए वसुमती चुनाव में पति के खिलाफ वोट देती है और वसुमती का यह महत्व पूर्ण वोट न्याय के साथ होता है |मैत्रेयी की नारी चेतना का यह सशक्त प्रमाण है वह अपने पात्रों को निर्णयक्षम बनाती है |रोहिणी अग्रवाल ने सही लिखा है [2] " दुर दुराई खंडित अवस्था में अपने मैत्रेयी पुष्पा की स्त्रियां अपने मनोबल का तिनका तिनका जोड़ मन वांछित पाने की दुर्घर्ष लड़ाई लड़ती है "

[1] कांति कुमार: समय के साथ चाक पर घूमती हुयी औरत, वसुधा, जुलाई - सितम्बर १९९८

[2] □□□□□□□□ □□□□ ":: □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □ □

'फाइटर' की डायरी कहानी संग्रह में उन्होंने पुलिस अकादमी में भर्ती होनेवाली बहादुर महिलावों की जीवंत कहानियां लिखी है| स्त्री विमर्श से सम्बन्धित दो आलेख संग्रह 'खुली खिड़कियां' और 'सुनो मालिक सुनो' भी प्रकाशित हुए है|

अतः निष्कर्ष रूप से कहे तो मैत्रेयी जी ने पुरुष को शासक के रूप में नहीं सहयोगी के रूप में मानती है |उनके अनुसार स्त्री विमर्श की परिभाषा इस प्रकार है -स्त्री को लेकर उसके जीवन के बारे में सोचना सम झना और विचार विमर्श करना स्त्रीविमर्श है | उनकी जो भी रचनायें है उनमें अपने अनुभवों के जीवंत प्रतिबिम्ब मिलता है | उन्होंने जो लिखा वह केवल उनका देखा या सोचा हुआ नहीं बल्कि भोगा और जिया हुआ यथार्थ है |समाज, साहित्य, और नारी जीवन के अनछुए विषयों के विशेष चयन के कारण मैत्रेयी पुष्पा हिंदी साहित्य जगत के प्रसिद्द और प्रतिष्ठित महिला साहित्यकार है | मैं उनके साहित्यिक और भौतिक जीवन पर दीर्घजीवी होने के शुभकामनायें देती हूँ |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कांति कुमार -'वसुधा ' जुलाई सितम्बर १९९८
2. राजेंद्र यादव -हंस फरवरी २००९ पृष्ट ५५
3. हीरा मीणा -मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों मैं नारी दशा और दिशा
4. उद्योग नगर प्रकाशन ग़ाज़ियाबाद २०१३
5. विपाशा पत्रिका -हिंदी निदेशालय प्रकाशन अंक १४८ सितम्बर अक्टूबर २०१०
6. आतिरा.वि -मैतेयी पुष्पा के उपन्यासों मैं स्त्री विमर्श वांगमयी बुक्स अलीगढ़ संस्करण २०१३